Date- 30/3/2020 Degree-I (Economics Hons.) ①

TOPIC — Role of Price Mechanism

(कीमत यंत्र की भूमिका)

कीमत यंत्र से तात्पर्य ऐसे कीमतों के एक समूह से है, जिसमें सभी वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतें बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के माँग तथा पूर्ति द्वारा निर्धारित होती है अर्थात् कीमतों के एक समूह को कीमत यंत्र कहा जाता है।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र रूप से अपना व्यवसाय चुन सकता है, उपभोक्ता अपनी आय को उचित वस्तुओं पर व्यय करने को स्वतंत्र होता है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत प्रभुता संपन्न उपभोक्ता (Sovereign Consumer), साधन स्वामी (Resource owner) एवं उद्यमी (Entrepreneurs) बाजार प्रणाली के आधार-स्तम्भ होते हैं जिसकी आर्थिक गतिविधियाँ स्वतंत्र रूप से संचालित होती है। इन तीनों तत्वों के स्वतंत्र गतिविधियों के बीच समन्वय स्थापित करने हेतु स्वतः बाजार की प्रक्रिया प्रभावी रहती है। स्वतः बाजार की प्रक्रिया पर बाजार कीमतें एवं कीमत तंत्र की प्रमुख भूमिका होती है।

कीमत यंत्र के उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि क्रेताओं एवं विक्रेताओं में साधनों, वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग एवं पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों के सामने से जो विभिन्न मूल्यों की श्रृंखला बनती है, उसे ही कीमत तंत्र अथवा कीमत प्रणाली कहते हैं।

कीमत तंत्र को समझने हेतु निम्नांकित तीन बातों का विश्लेषण आवश्यक है :—

(2)

Date / /　　　　Page No.:

(1) माँग का सिद्धांत :- वस्तु की माँग एवं कीमत में जो संबंध होता है उसको संबंध माँग के नियम से है अतः इसके अध्ययन के बिना कीमत पत्र का अध्ययन सम्भव नहीं है।

(2) पूर्ति का सिद्धांत :- पूर्ति से आशय वस्तु एवं सेवा की उस मात्रा से है जिसे उत्पादक विभिन्न कीमतों पर बाजार में बेचने को तत्पर होता है। अतः पूर्ति के सिद्धांत के अध्ययन के बिना कीमत तंत्र को समझना कठिन है।

(3) साम्य कीमत का सिद्धांत :- साम्य कीमत के सिद्धांत के अंतर्गत वस्तु की माँग एवं पूर्ति बराबर रहती है। इस स्थिति में जो कीमत निर्धारित होती है उसे साम्य कीमत कहते हैं। अतः कीमत प्रणाली का सीधा संबंध साम्य कीमत के सिद्धांत से सीधे तौर पर है।

कीमत प्रणाली की विशेषताएँ

कीमत प्रणाली की निम्नांकित विशेषताएँ हैं :-

(1) यह एक सामूहिक परिणाम है।

(2) इसके अंतर्गत आर्थिक सिद्धांत के आधारभूत तत्वों यथा बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता, बाजार

में अनेक क्रेता एवं विक्रेता की उपस्थिति, क्रय विक्रय में मुद्रा का प्रयोग तथा अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में पूर्ण स्वतंत्रता का विश्लेषण किया जाता है

(3) स्वतंत्र आर्थिक निर्णयों से संचालित होता है

(4) आर्थिक संगठन में माँग एवं पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों में परिवर्तन के द्वारा साधनों, वस्तुओं एवं सेवाओं में आवंटन कार्य संपादित करता है

कीमत तंत्र या कीमत प्रणाली की भूमिका

(1) किस वस्तु का उत्पादन किया जाए :— एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता सर्वोपरि होता है, उसी के इच्छा के आधार पर उत्पादक वस्तु एवं सेवाओं का उत्पादन करता है।

(2) उत्पादन कैसे किया जाए :—

उत्पादक द्वारा अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु वस्तु के कीमत की लाभ के साथ विश्लेषण करता है एवं इसी तर्क को ध्यान में रखते हुए उत्पादक उत्पादन करता है।

(3) किसके लिए उत्पादन किया जाए :—

इस समस्या का समाधान वितरण प्रणाली से है तथा इसका समाधान

Maharaza

की कीमत प्रणाली का विस्तृत अध्ययन करने से प्राप्त किया जा सकता है।

(4) संसाधनों का कुशलतम उपयोग कैसे हो:-

संसाधनों का कुशलतम उपयोग करने हेतु कीमत प्रणाली को आधार मानकर वस्तुओं एवं सेवाओं का श्रेष्ठतम उत्पादन के स्तर को प्राप्त किया जा सकता है।

(5) आर्थिक विकास, अनुरक्षण एवं लोच :-

कीमत प्रणाली के विश्लेषण द्वारा आर्थिक विकास, अनुरक्षण एवं लोच के सिद्धांत को उद्घाटित होता है। अतः कीमत प्रणाली की भूमिका महत्वपूर्ण है।

व्याख्यान लेखक :-
डॉ० अभय कुमार पाठक
अर्थशास्त्र विभाग,
मारवाड़ी महाविद्यालय,
दरभंगा।
WhatsappNumber-
9939036994